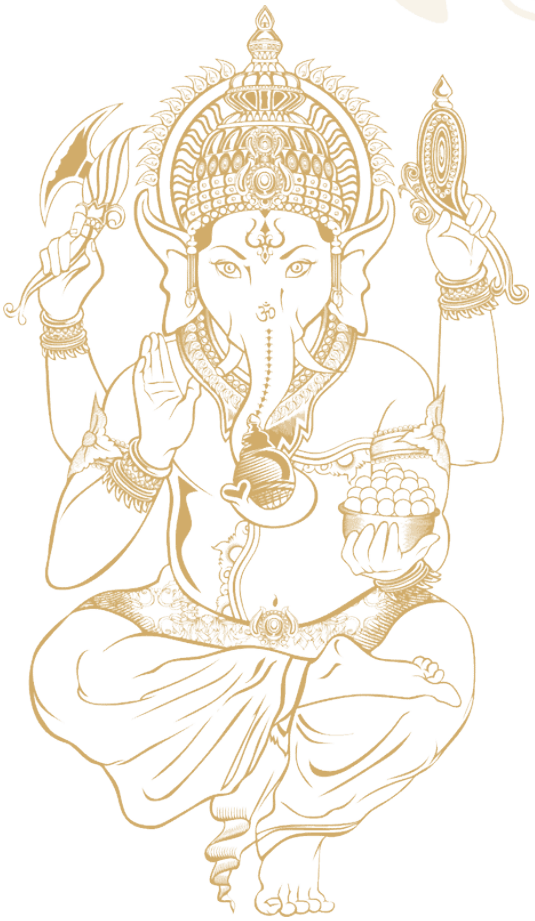

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
28/02/1999	जन्म तिथि	05/12/2001
रविवार	दिन	बुधवार
घंटे 17:10:00	जन्म समय	15:05:00 घंटे
घटी 25:43:24	जन्म समय(घटी)	20:08:23 घटी
India	देश	India
Jaipur Rly Station	स्थान	Jaipur Rly Station
26:54:00 उत्तर	अक्षांश	26:54:00 उत्तर
75:48:00 पूर्व	रेखांश	75:48:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:26:48	स्थानिक संस्कार	-00:26:48 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:52:38	सूर्योदय	07:01:38
18:26:37	सूर्यास्त	17:33:15
23:50:33	चित्रपक्षीय अयनांश	23:52:45

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 7वर्ष 9मा 1दि		29:35:16	कर्क	लग्न	मेष	08:27:08	बुध 15वर्ष 11मा 20दि	
शुक्र		15:35:20	कुंभ	सूर्य	वृश्चि	19:26:01	शुक्र	
30/11/2013		23:55:04	कर्क	चंद्र	कर्क	17:28:19	25/11/2024	
30/11/2033		16:30:40	तुला	मंगल	कुंभ	03:34:00	25/11/2044	
शुक्र	01/04/2017	03:13:13	मीन	बुध	वृश्चि	19:42:40	शुक्र	27/03/2028
सूर्य	01/04/2018	09:38:34	मीन	गुरु व	मिथु	20:04:41	सूर्य	27/03/2029
चन्द्र	01/12/2019	14:17:58	मीन	शुक्र	वृश्चि	09:48:31	चन्द्र	26/11/2030
मंगल	30/01/2021	06:06:07	मेष	शनि व	वृष	17:27:09	मंगल	26/01/2032
राहु	31/01/2024	28:18:58	कर्क	राहु	मिथु	03:18:42	राहु	25/01/2035
गुरु	01/10/2026	28:18:58	मक	केतु	धनु	03:18:42	गुरु	25/09/2037
शनि	30/11/2029	20:25:20	मक	हर्ष	मक	27:33:35	शनि	25/11/2040
बुध	30/09/2032	09:21:00	मक	नेप	मक	12:45:16	बुध	26/09/2043
केतु	30/11/2033	16:36:09	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	21:09:21	केतु	25/11/2044

लग्न-चलित

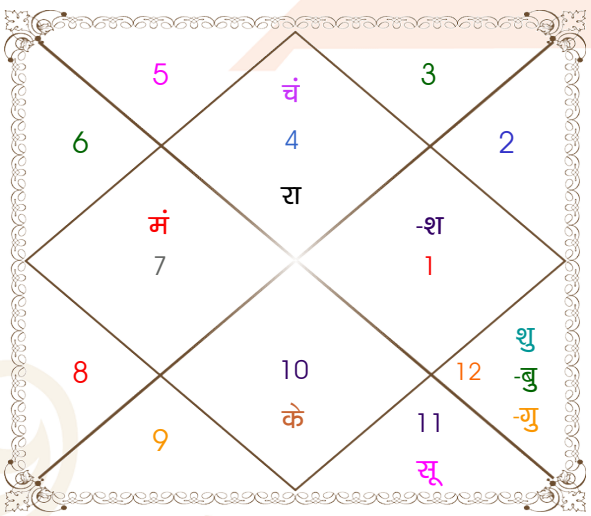

लग्न-चलित

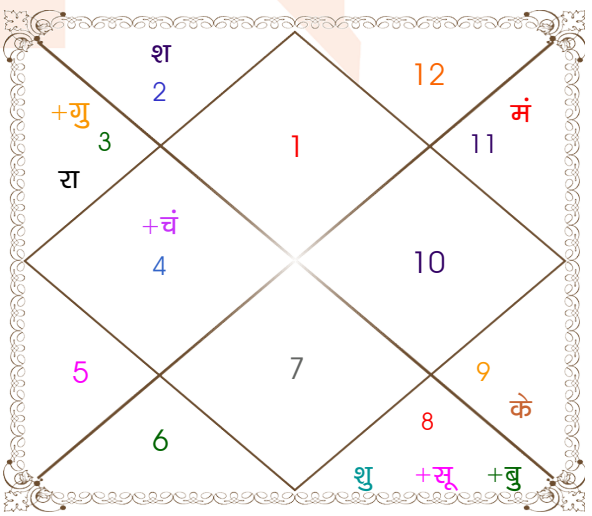

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	जलचर	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	--	भाग्य
योनि	मार्जार	मार्जार	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	चन्द्र	चन्द्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	कर्क	कर्क	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	28.00		

Mr. का वर्ग श्वान है तथा Ms. का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

Ms. मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Ms. कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।